

○ 12 / 05 / 21 की मुरली से चार्ट ○

⇒ TOTAL MARKS:- 100 ⇐

]] 1 ]] होमवर्क (Marks: 5\*4=20)

>>> \*कोई विकर्म तो नहीं किया ?\*

>>> \*तन - मन - धन इस यज्ञ में स्वाहा किया ?\*

>>> \*आलस्य के भिन्न भिन्न रूपों को समाप्त कर सदा हुल्लास में रहे ?\*

>>> \*सोचना और कहना समान रहा ?\*

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

☆ \*अव्यक्त पालना का रिटर्न\* ☆

☼ \*तपस्वी जीवन\* ☼

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

~◇ \*देह-अभिमान को छोड़ना-यह बड़े ते बड़ा त्याग है। इसके लिए हर सेकेण्ड अपने आपको चेक करना पड़ता है।\* इस त्याग से ही तपस्वी बनेंगे और एक बाप से ही सर्व सम्बन्धों का अनुभव करेंगे।

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

]] 2 ]] तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>>> \*इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न

दिया ?\*

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

☆ \*अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए\* ☆

☉ \*श्रेष्ठ स्वमान\* ☉

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

✽ \*"मैं दृष्टि द्वारा शक्तियों की प्राप्ति करने वाली अनुभवी आत्मा हूँ"\*

~◊ दृष्टि द्वारा शक्तियों की प्राप्ति की अनुभूति करने के अनुभवी हो ना!  
 \*जैसे वाणी द्वारा शक्ति की अनुभूति करते हो। मुरली सुनते हो तो समझते हो ना शक्ति मिली। ऐसे दृष्टि द्वारा शक्तियों की प्राप्ति के अनुभूति के अभ्यासी बने हो या वाणी द्वारा अनुभव होता है, दृष्टि द्वारा कम।\* दृष्टि द्वारा शक्ति कैच कर सकते हो? क्योंकि कैच करने के अनुभवी होंगे तो दूसरों को भी अपने दिव्य दृष्टि द्वारा अनुभव करा सकते हैं। और आगे चल कर वाणी द्वारा सबको परिचय देने का समय भी नहीं होगा और सरकमस्टांस भी नहीं होंगे, तो क्या करेंगे?

~◊ वरदानी दृष्टि द्वारा, महादानी दृष्टि द्वारा महादान देंगे, वरदान देंगे। तो पहले जब स्वयं में अनुभव होगा तब दूसरों को करा सकेंगे। दृष्टि द्वारा शान्ति की शक्ति, प्रेम की शक्ति, सुख वा आनन्द की शक्ति सब प्राप्त होती है। जड़ मूर्तियों के आगे भी जाते हैं तो जड़ मूर्ति बोलती तो नहीं है ना! फिर भी भक्त आत्माओंको कुछ-न-कुछ प्राप्ति होती है, तब तो जाते हैं। कैसे प्राप्ति होती है? उनकी दिव्यता के वायब्रेशन से और दिव्य नयनों की दृष्टि को देख कर वायब्रेशन लेते हैं। \*कोई भी देवता या देवी की मूर्ति में विशेष अटेन्शन नयनों के तरफ देखेंगे। हरेक का अटेन्शन सूरत की तरफ जाता है। क्योंकि मस्तक के द्वारा वायब्रेशन मिलते हैं, नयनों के द्वारा दिव्यता की अनुभूति होती है। वह आप चैतन्य मूर्तियों की जड़ मूर्तियाँ हैं। आप सबने चैतन्य में यह सेवा की है तब जड़ मूर्तियाँ बनी हैं। तो दृष्टि द्वारा शक्ति लेना और दृष्टि

द्वारा शक्ति देना - यह प्रैक्टिस करो। शान्ति के शक्ति की अनुभूति बहुत श्रेष्ठ है।\*

~◇ जैसे वर्तमान समय साइंस की शक्ति का प्रभाव है, हर एक अनुभव करते हैं। लेकिन साइंस की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही निकली है ना! जब साइंस की शक्ति अल्पकाल के लिए प्रप्ति करा रही है तो साइलेन्स की शक्ति कितनी प्राप्ति करायेगी। पद्मगुणा तो इतनी शक्ति जमा करो। बाप की दिव्य दृष्टि द्वारा स्वयं में शक्ति जमा करो। तब समय पर दे सकेंगे। अपने लिए ही जमा किया और कार्य में लगा दिया अर्थात् कमाया और खाया। जो कमाते हैं और खा के खत्म कर देते हैं उनका कभी जमा का खाता नहीं रहता और जिसके पास जमा का खाता नहीं होता है उसको समय पर धोखा मिलता है। धोखा मिलेगा तो दुःख की प्राप्ति होगी। \*अगर साइलेन्स की शक्ति जमा नहीं होगी, दृष्टि के महत्त्व का अनुभव नहीं होगा तो लास्ट समय श्रेष्ठ पद प्राप्त करने में धोखा खा लेंगे फिर दुःख होगा। पश्चात्ताप् होगा ना। इसलिए अभी से बाप की दृष्टि द्वारा प्राप्त हुई शक्तियों को अनुभव करते जमा करते रहो।\*

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

॥ 3 ॥ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➤➤ \*इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?\*

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

☉ \*रुहानी ड्रिल प्रति\* ☉

☆ \*अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं\* ☆

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

~◇ जैसे जिस्मानी मिलिटी को ऑर्डर करते हैं - एक सेकण्ड में जहाँ हो. वहाँ

ही खडे हो जाओ। \*अगर वह इस ऑर्डर को सोचने में व समझने में ही टाइम लगा दे तो उसका रिजल्ट क्या होगा?\* विजय का प्लान प्रैक्टिकल में नहीं आ सकता।

~◇ \*इसी प्रकार सदा विजयी बनने वाले की विशेषता यही होगी एक सेकण्ड में अपने संकल्प को स्टॉप कर लेना।\* कोई भी स्थूल कार्य व ज्ञान के मनन करने में बहुत बिजी है लेकिन ऐसे समय में भी अपने आप को एक सेकण्ड में स्टॉप कर लेना।

~◇ \*जैसे वे लोग यदि बहुत तेजी से दौड़ रहे हैं वा कश्म - कश के युद्ध में उपस्थित हैं, वे ऐसे समय में भी स्टॉप कहने से स्टॉप हो जायेंगे।\* इसी प्रकार यदि किसी समय यह संकल्प नहीं चलता है अथवा इस घड़ी मनन करने के बजाय बीजरूप अवस्था में स्थित हो जाना है। तो सेकण्ड में स्टॉप हो सकते हैं?

◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

॥ 4 ॥ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➤➤ \*इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?\*

◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

☉ \*अशरीरी स्थिति प्रति\* ☉

☆ \*अव्यक्त बापदादा के इशारे\* ☆

◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

~◇ अशरीरी बनने का अभ्यास इतना ही सरल अनुभव होता है, जैसे शरीर में आना अति सहज और स्वतः लगता है। \*रूहानी मिलिट्री हो ना? मिलिट्री अर्थात् हर समय सेकण्ड में ऑर्डर को प्रैक्टिकल में लाने वाले।\* अभी-अभी ऑर्डर हो

अशरीरी भव, तो एवररेडी हो या रेडी होना पडेगा? \*अगर मिल्ट्री रेडी होने में समय लगाये तो विजय होगी? ऐसा सदा एवररेडी रहने का अभ्यास करो।\*

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

॥ 5 ॥ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➤➤ \*इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?\*

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

॥ 6 ॥ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)

( आज की मुरली के सार पर आधारित... )

✽ \*"ड्रिल :- सम्पूर्ण पावन बनना"\*

➤➤ \_ ➤➤ अमृतवेला का ये सुहानी पल रात के अँधेरे को खतम कर सुबह की रोशनी की ओर रुख कर रहा है... वैसे ही कलियुगी अंधियारे को चीरते हुए ये संगमयुग... सतयुग की ओर ले जा रहा है... \*प्यारे बाबा जब से आये हैं, संगम की हर घडी ही अमृतवेला बन गई है... जो सदा सुखों की ओर ले जाती है... हर पल ही कितना सुहावना हो गया है... इतनी पावन, सुन्दर वेला में मैं आत्मा प्यारे बाबा से प्यारी-प्यारी बातें करने पहुँच जाती हूँ पावन वतन में...\*

✽ \*मेरे मन मंदिर में अपनी मूर्त बसाते हुए प्यारे बाबा कहते हैं:-\* "मेरे मीठे फूल बच्चे... कितने मीठे खिले से महकते फूल से धरा पर उतरे थे पर खेलते खेलते काले पतित हो गए... \*अब इस देह की दुनिया से निकल ईश्वर पिता की सोने सी यादों में स्वयं को उसी दिव्यता से दमकाओ क्योंकि अब सुनहरी सुखो भरी दुनिया में चलना है..."

➤➤ ➤➤ \*निराकारी बाबा की यादों में स्वर्णिम सखों को अपने नाम करते

हुए मैं आत्मा कहती हूँ:-\* “हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... मैं आत्मा अपने खोये रूप को सौंदर्य को आपकी यादों में पुनः पा रही हूँ... \*कंचन काया और कंचन महल की अधिकारी बन रही हूँ और इस दुनिया से उपराम हो रही हूँ...”\*

\* \*अपने रूहानी नैनों से पावनता की खुशबू फैलाते हुए मीठे बाबा कहते हैं:-\* “मीठे प्यारे लाडले बच्चे... \*ईश्वर पिता के साथ का समय बहुत कीमती है... यादों में रहकर अपने सच्चे दमकते स्वरूप को पाकर सुखों की दुनिया में मुस्कराओ...\* यादों में अपनी दिव्यता और शक्तियों को फिर से पाकर सुंदर तन और मन से सुन्दरतम दुनिया के रहवासी बनो...”

»→ \_ »→ \*मैं आत्मा प्रभु की यादों की धारा में बहकर सुन्दर कमल बन खिलते हुए कहती हूँ:-\* “मेरे प्राणप्रिय बाबा... \*मैं आत्मा आपकी मीठी यादों में अपनी खोयी सुंदरता को पाकर मुस्करा रही हूँ...\* दिव्य गुणों को धारण कर पवित्रता के श्रृंगार से सजकर देवताई स्वरूप में देवताओं की दुनिया घूम रही हूँ...”

\* \*रूहानी यादों में मेरे मन के चमन को खिलाकर मेरे रूहानी बाबा कहते हैं:-\* “प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... \*सिर्फ बाबा की यादें ही एकमात्र उपाय हैं जो इस पतित तन और मन को खूबसूरत और पवित्र बना सकता है... तो इस समय को यादों में भर दो... अपने पुरुषार्थ को तीव्र कर स्वयं को निखारने में पूरी तन्मयता से जुट जाओ...\* क्योंकि अब पवित्र दुनिया में चलने और सुख लेने का समय हो गया है...”

»→ \_ »→ \*एक की लगन में मगन होकर जीवन में मिठास भरकर मैं आत्मा कहती हूँ:-\* “हाँ मेरे मीठे बाबा... \*मैं आत्मा जनमों के कालेपन को आपकी मीठी यादों में धो रही हूँ...\* वही सुंदर देवताई स्वरूप पा रही हूँ और सुख और शांति की दुनिया की अधिकारी होकर मीठे सुखों में खिलखिला रही हूँ... \*यादों में पावन बनकर खिल उठी हूँ...\*”

[[ 7 ]] योग अभ्यास (Marks:-10)

( आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित... )

☀ \* "ड्रिल :- कर्म, अकर्म और विकर्म की गति को जान अब कोई विकर्म नहीं करना है\*"

☞ \_ ☞ कर्मों की जिस गुह्य गति का ज्ञान भगवान से मुझे मिला है उस कर्म - अकर्म - विकर्म की गति को बुद्धि में रख अब मुझे अपने हर कर्म पर अटेंशन देते हुए इस बात का पूरा ध्यान रखना है कि अनजाने में भी मुझ से ऐसा कोई कर्म ना हो जो विकर्म बने। \*अपने हर कर्म को श्रेष्ठ बनाने के लिए सबसे पहले मुझे अपने हर संकल्प को शुद्ध और श्रेष्ठ बनाना है। और इसके लिये अपने प्यारे पिता की आज्ञाओं को अपने जीवन में धारण कर कदम - कदम श्रीमत पर चलने का मुझे पूरा अटेंशन रखना है\*। मन ही मन स्वयं से बातें करती मैं अपने आप से और अपने प्यारे बाबा से प्रोमिस करती हूँ कि बिना सोचे समझे कोई भी कर्म अब मैं कभी नहीं करूँगी। हर कर्म करने से पहले चेक करूँगी कि वो श्रीमत प्रमाण है या नहीं!

☞ \_ ☞ कर्म - अकर्म - विकर्म की गति को बुद्धि में रख अपने हर कर्म को श्रेष्ठ बनाने की प्रतिज्ञा अपने प्यारे पिता से करके अब मैं कर्मों की अति गुह्य गति का ज्ञान देने वाले ज्ञानसागर अपने शिव बाबा की अति मीठी याद में मन बुद्धि को स्थिर करके बैठ जाती हूँ और अपने मन बुद्धि का कनेक्शन परमधाम में रहने वाले अपने पिता से जोड़ लेती हूँ। \*जैसे बिजली का स्विच ऑन करते ही सारे घर में प्रकाश फैल जाता है ऐसे ही स्मृति का स्विच ऑन करते ही परमधाम से परमात्म शक्तियों की लाइट सीधी मुझ आत्मा के ऊपर पड़नी शुरू हो जाती है और मेरे चारों तरफ एक अद्भुत दिव्य अलौकिक प्रकाश फैल जाता है\*। इस सतरंगी प्रकाश के खूबसूरत झरने के नीचे बैठी मैं महसूस करती हूँ जैसे धीरे - धीरे मैं शरीर के भान से मुक्त होकर एक बहुत ही न्यारी लाइट स्थिति में स्थित होती जा रही हूँ। स्वयं को मैं बहुत ही हल्का अनुभव कर रही हूँ।

☞ \_ ☞ ये हल्केपन का निराला अनभव मुझे देह के हर बंधन से मुक्त कर

रहा है। देह रूपी डाली का आधार छोड़ मैं आत्मा पँछी बड़ी आसानी से ऊपर की ओर उड़ान भर रही हूँ और देह से निकल कर चमकती हुई अति सूक्ष्म ज्योति बन अपनी किरणों को बिखेरती हुई आकाश की ओर उड़ती जा रही हूँ। \*देह और देह की इस साकारी दुनिया को पार कर, मैं आकाश से ऊपर अब फरिश्तों की आकारी दुनिया से होकर अपनी निराकारी दुनिया में पहुँच गई हूँ\*। आत्माओं की इस निराकारी दुनिया अपने इस शान्तिधाम घर में आकर मैं गहन शांति का अनुभव कर रही हूँ। \*कुछ क्षणों के लिए गहन शांति के गहरे अनुभवों में खोकर, अब मैं शांति के सागर, सुख के सागर, प्रेम और पवित्रता के सागर अपने पिता के पास पहुँच कर, मन बुद्धि के नेत्रों से उन्हें निहार रही हूँ\*।

»→ \_ »→ अपने पिता के अति सुन्दर मनभावन स्वरूप को मैं देख रही हूँ जो मेरे ही समान एक प्वाइंट ऑफ लाइट, एक अति सूक्ष्म बिंदु हैं किंतु गुणों में वो सिंधु हैं। उनके सानिध्य में, उनसे आ रही सर्वशक्तियों की किरणों के फव्वारे के नीचे बैठ मैं स्वयं को उनकी शक्तियों से भरपूर कर रही हूँ। \*अपने परमधाम घर में अपने परमपिता परमात्मा शिव बाबा के सामने निराकारी, निर्विकारी और निर्सकल्प स्थिति में स्थित हो कर मैं गहन शांति का अनुभव कर रही हूँ\*। बाबा से सर्वगुणों और सर्वशक्तियों की अनन्त सतरंगी किरणें निकल कर मुझे आत्मा में समा रही हैं और मैं स्वयं में इन गुणों और शक्तियों को भरकर स्वयं को सर्वगुण और सर्वशक्तिसम्पन्न बना रही हूँ। \*बीज रूप अवस्था की मैं गहन अनुभूति कर रही हूँ जो मुझे अतीन्द्रिय सुख प्रदान कर रही है\*।

»→ \_ »→ अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने का भरपूर आनन्द लेकर और शक्ति स्वरूप स्थिति में स्थित हो कर अब मैं पुनः लौट रही हूँ फिर से देहधारियों की साकारी दुनिया में। फिर से अपने साकार तन में, साकार दुनिया में, साकार सम्बन्धों के बीच अपने ब्राह्मण स्वरूप में मैं स्थित होकर देह और देह की दुनिया में फिर से अपना पार्ट बजा रही हूँ। \*किन्तु देह और देहधारियों के बीच में रहते हुए भी अपने सत्य स्वरूप में टिक कर अपनी दिव्यता और रूहानियत का अनुभव करते हुए अब मैं उपराम स्थिति में स्थित होकर, कर्म - अकर्म - विकर्म की गृह्य गति को बुद्धि में रख कर ही हर कर्म कर रही हूँ\*। कर्म - अकर्म - विकर्म की गति बुद्धि में रहने से अब हर कर्म मैं सोल



कॉन्शियस होकर कर रही हूँ इसलिये मेरा हर कर्म स्वतः ही श्रेष्ठ बनता जा रहा है।

॥ 8 ॥ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)  
( आज की मुरली के वरदान पर आधारित... )

- \* \*मैं आलस्य के भिन्न भिन्न रूपों को समाप्त कर सदा हुल्लास में रहने वाली आत्मा हूँ।\*
- \* \*मैं तीव्र पुरुषार्थी आत्मा हूँ।\*

➤➤ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

॥ 9 ॥ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)  
( आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित... )

- \* \*मैं आत्मा सोचना और कहना को सदा समान बनाती हूँ ।\*
- \* \*मैं सच्ची सेवाथारी आत्मा हूँ ।\*
- \* \*मैं आत्मा शक्ति स्वरूप हूँ ।\*

➤➤ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

॥ 10 ॥ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)  
( अव्यक्त मुरलियों पर आधारित... )

✽ अव्यक्त बापदादा :-

» \_ » तो ऐसे एवररेडी हो अर्थात् अनुभवी स्वरूप हो? साथ जाने के लिए तैयार हो ना या कहेंगे अभी अजुन यह रह गया है! ऐसी अनुभूति होती है वा सेवा में इतने बिजी हो गये हो जो घर ही भूल जाता है। सेवा भी इसीलिए करते हो कि आत्माओं को मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा दिलावें। सेवा में भी यह स्मृति रहे कि बाप के साथ जाना है तो सेवा में सदा अचल स्थिति रह सकती है? \*सेवा के विस्तार में सार रूपी बीज की अनुभूति को भूलो मत। विस्तार में खो नहीं जाओ। विस्तार में आते स्वयं भी सार स्वरूप में स्थित रह और औरों को भी सार स्वरूप की अनुभूति कराओ। समझा -अच्छा।\*

✽ \*"ड्रिल :- सेवा के विस्तार में सार रूपी बीज की अनुभूति करना"\*

» \_ » \*मैं आत्मा मन रूपी घोड़े में बैठकर रंग-बिरंगी दुनिया के आकर्षणों के विस्तार में दौड़ लगा रही थी...\* अपनी मंजिल को दूँढते हुए न जाने कहाँ-कहाँ भटक रही थी... \*अब परमपिता शिव बाबा ने आकर मंजिल तक पहुँचने का रास्ता बताकर भटकती हुई मेरे मन रूपी घोड़े की दिशा बदल दी...\* अब मैं आत्मा मन रूपी घोड़े की लगाम को अपने हाथों में पकड़कर पहुँच जाती हूँ परमधाम...

» \_ » \*मैं आत्मा परमधाम में चमकते हुए ज्योतिर्बिंदु से निकलती हुई रंग-बिरंगी किरणों में खो जाती हूँ...\* दुनियावी रंगों के मुकाबले बाबा से निकलती हुई किरणों का रंग कितना ही आकर्षणीय है... प्यारे बाबा से ज्ञान, गुण, शक्तियों की अलग-अलग रंगों की किरणें निकलकर मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं... मैं आत्मा इन किरणों से भरपूर होकर सम्पन्न बन रही हूँ... सर्व खजानों की मालिक होने का अनुभव कर रही हूँ...

» \_ » अब मैं आत्मा विश्व सेवाधारी की स्टेज पर स्थित हो जाती हूँ... \*मैं आत्मा महादानी बन बाबा से प्राप्त अविनाशी ज्ञान को सबमें बाँट रही हूँ...\* गुण, शक्तियों के खजानों को स्वयं के लिए और सम्बन्ध सम्पर्क में आने वालों के लिए समय प्रमाण यज कर रही हूँ... \*मैं आत्मा ज्ञान, योग, धारणा, सेवा

चारों सब्जेक्ट्स में पास विद आनर होने का पुरुषार्थ कर एवररेडी बन रही हूँ...\*

»→ \_ »→ मैं आत्मा भटकती हुई आत्माओं को बाबा का सन्देश देकर उनका भटकन समाप्त कर रही हूँ... \*सबको राजयोग का गुह्य ज्ञान देकर सच्चा-सच्चा राजमार्ग बता रही हूँ...\* जिस राजमार्ग पर चलकर राजाओं का भी राजा बनते हैं... मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा पाते हैं... मैं आत्मा विश्व कल्याणकारी बन सेवा निःस्वार्थ सेवा कर रही हूँ...

»→ \_ »→ मैं आत्मा इसी स्मृति में रहकर सेवा करती हूँ कि बाबा के साथ वापस घर जाना है... \*स्मृति स्वरूप बन औरों को भी सदा घर की स्मृति दिलाकर एवररेडी बनाने की सेवा कर रही हूँ...\* अब मैं आत्मा सदा अचल स्थिति में रहकर सेवा करती हूँ... सदा बाबा की और घर की याद में रहकर सेवा कर रही हूँ... मैं आत्मा सदा बीजरूप धारण कर बीजरूप बाबा की याद में ही रहती हूँ... \*अब मैं आत्मा सेवा के विस्तार में आकर स्वयं भी सार स्वरूप में स्थित रहती हूँ और औरों को भी सार स्वरूप की अनुभूति कराती हूँ...\*

---

⊙\_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स जरूर दें ।

ॐ शान्ति ॐ

---